arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:05 PM Page 154

राजनाथ सिंह 'सूर्य'

संत राजनेता नानाजी

बहुत कम लोगों में रचनात्मक सृजन की ऐसी भूख देखने को मिलेगी जैसी नानाजी में थी। कृषि और शिक्षा उनकी पहली दो प्राथमिकताएं थीं।

नानाजी देशमुख के निधन से सार्वजनिक क्षेत्र की एक ऐसी शख्सियत का अवसान हुआ है, जो समरसता की राजनीति और सहजतायुक्त सामाजिक सौहार्द के साथ-साथ स्वावलंबनयुक्त ग्रामीण परिवेश को पुष्ट करने के प्रति समर्पित थे। चाहे वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे हों, जनसंघ के संगठन मंत्री अथवा जनता पार्टी के महामंत्री, उनका चित्त हमेशा ग्रामोत्थान की प्राथमिकता से आच्छादित रहा। इसलिए जब 1977 में वह बलरामपुर से सांसद बने, तो गांवों को स्वावलंबी बनाने के लिए उन्होंने जयप्रभा ग्राम की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया और इसकी शुरूआत उन्होंने गोरखपुर के वांसगांव क्षेत्र में की थी।

मैंने सर्वप्रथम 1950 में उनका दर्शन तब किया था, जब मैं विद्यार्थी था और लू लगने के कारण लगभग अचेत सा हो गया था। तब नानाजी देशमुख ने स्वयं मेरा उपचार किया था। वह नाम के ही नाना नहीं थे, मेरे जैसे सैकड़ों ऐसे कार्यकर्ता होंगे, जिन्हें नाना जैसा उनका प्यार मिला था।

बहुत कम लोगों मे रचनात्मक सृजन की ऐसी भूख देखने को मिलेगी, जैसी नानाजी मे थी। कृषि उनकी प्राथमिकता थी। ग्रामीण उद्योग उनके ग्रामीण स्वावलंबन का माध्यम था। शायद यही कारण था कि वर्ष 1967 के जनसंघ घोषणापत्र में उन्होंने ही 'हर हाथ को काम और हर खेत को पानी' का नारा दिया था। कृषि के बाद शिक्षा उनकी दूसरी प्राथमिकता थी। गोरखपुर मे प्रचारक के रूप में जहां वह कृषि कार्य करने वाले स्वयंसेवकों को स्वदेशी साधनों से उत्तम खेती के लिए प्रेरित करते रहे, वहीं संस्कारी शिक्षा के लिए उसी नगर के पक्की बाग मे सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना कर विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा श्रृंखला का सूत्रपात किया था। उन्हें ध्येय की सार्थकता के लिए किसी भी दायित्व से परहेज नहीं था। अपने सहज आत्मीय व्यवहार और प्रखरता से उन्होंने ग्रामीण अंचल से जितने कार्यकर्ताओं को समाजसेवा के लिए प्रेरित किया, उतना शायद ही किसी अन्य ने किया हो।

जनसंघ की स्थापना होने पर दीनदयाल जी के सहयोगी के रूप मे देशभर मे काम करने के लिए संघ के जिन प्रचारकों ने दायित्व संभाला, उनमें नानाजी का प्रमुख स्थान रहा है। उनकों जनसंघ के कार्यकर्ताओं को प्रेरित करने भर से कभी संतोष नहीं हुआ। वह सभी राजनीतिक दलों में पैठ रखते थे। शायद बहुत कम लोगों को स्मरण होगा कि वर्ष 1962 के जनसंघ के घोषणापत्र के प्रारूप को अंतिम रूप कांग्रेस के प्रख्यात नेता संपूर्णानंद ने दिया था। नानाजी ही 1963 में कानपुर के संघ शिक्षा वर्ग में डॉक्टर राम मनोहर लोहिया को ले गए थे और जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति अभियान के वह सूत्रधार बने थे।

नानाजी स्वयं अपरिग्रही थे। मुझे स्मरण है कि वर्ष 1977 में राष्ट्रपति भवन से उन्हें मोरारजी भाई मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में शपथ लेने का आमंत्रण प्राप्त हुआ था। शोध संस्थान में हम उनके पास ही बैठे थे। निमंत्रण पत्र मुझे देते हुए उन्होंने कहा ला तुम जाकर शपथ ले लेना। सत्ता के प्रति अनासक्ति, ऐसा सहज भाव बहुत कम लोगों मे देखने को मिलता है। यही कारण है कि जब जनता पार्टी में सत्ता के लिए नोच-खसोट अपने चरम पर पहुंचने लगी, तो उन्होंने साठ वर्ष की आयु हो जाने पर सत्ता और दलीय पदों की राजनीति से अलग हो जाने का फैसला लिया तथा चित्रकूट में ऐस रमे कि अंतिम सांस भी वहीं ली। नानाजी का स्वाभिमान अनुकरणीय था। इसलिए उच्चतम स्थान को रिक्त करने के बाद शून्य से प्रारंभ कर वह फिर उसी ऊंचाई पर पहुंचे। ■

लेखक परिचय

लेखक, पूर्व राज्यसभा सदस्य हैं व जाने-माने स्तंभकार हैं। सक्रिय राजनीति में रहते हुए भी लेखन व पत्रकारिता में स्वतंत्र चिंतन कैसे हो सकता है, इसका वह अनुकरणीय उदाहरण हैं।

9 मार्च, 2010
अमर उजाला

संत राजनेता नानाजी

राजनाथ सिंह 'सूर्य'

डॉ. जे.के.जैन

पारस जैसे थे नानाजी

पारस पत्थर का यही गुण है कि वह उसे छूने वाले हर लोहे के टुकड़े को सोना बना देता है। नानाजी ने जीवन भर यही काम किया। मेरे जैसे अनेक साधारण व्यक्तियों को छुआ और विकसित किया।

पारस पत्थर का यही गुण है कि वह स्वयं को सोना नहीं बनाता, अपितु हर लोहे के टुकड़े को, जो भी उसे छू जाता है, उसे सोना बना देता है। नानाजी ने जीवन भर यही काम किया। मेरे जैसे अनेक साधारण व्यक्तियों को छुआ और विकसित किया। मेरे परिवार में केवल मैं संघ का स्वयंसेवक बना और केवल मैं ही राजनीतिक गतिविधियों के साथ जुड़ा, लेकिन मेरे परिवार का हर सदस्य नानाजी की बात को सर्वोच्च आदर के साथ सदैव मानता रहा। वह इसलिए नहीं कि वह एक बड़े नेता थे किन्तु इसीलिए कि वह पूरे परिवार के लिए सर्वमान्य थे, सबसे बड़े थे और पूज्यनीय थे।

अति साधारण लोगों से अत्यन्त असाधारण कार्य करवा लेने की अद्भुत क्षमता नानाजी में थी। दिनांक 17 जून 1975 को मेरी बेटी सोना का जन्म हुआ था और इसके केवल सात दिन बाद एमरजेंसी की घोषणा हो गयी थी। एमरजेंसी के कुशासन को समाप्त कर देश में प्रजातांत्रिक व्यवस्था को पुनर्स्थापित करने में नानाजी अग्रणी भूमिका निभा रहे थे। देश की पुलिस और सभी खुफिया एजेंसियां नानाजी को गिरफ्तार करना चाहती थीं लेकिन नानाजी अनेक दिनों तक भूमिगत रहते हुए देशव्यापी आंदोलन का संचालन करते रहे। उस दौरान लगभग रोजाना उन्हें रात्रि में निवास बदलना होता था। ऐसे समय में आवश्यकता हुई एक कार और ड्राइवर की, जिस पर पुलिस शक न कर सके और नानाजी पुलिस एवं खुफिया एजेंसियों की आंखों में धूल झोंकते हुए निरंतर गति से आवश्यक भ्रमण करते रहें। मेरी पत्नी रागिनी के अभी सर्जरी के टांके भी नहीं निकाले गये थे और बच्ची अभी केवल सात दिन की थी। लेकिन रागिनी ने नानाजी के कार्य की आवश्यकता और महत्व को समझा और उसने नानाजी की गाड़ी के ड्राइवर की जिम्मेदारी संभाल ली। पहचाने जाने का खतरा दिन में अधिक था। नानाजी ज्यादातर रात को ही किसी से मिलने के लिए जाते थे। इसलिए ड्राइवर की आवश्यकता रातभर रहती थी। कई बार ऐसे अवसर आये कि पुलिस ने गाड़ी को रोक लिया। ऐसे मौकों पर रागिनी पुलिस को बताती थी कि गाड़ी में मेरे बूढ़े पिता जी हैं और मैं उनको अस्पताल ले जा रही हूं।

एक दिन की बात है कि इंडियन एक्सप्रेस के चेयरमैन रामनाथ गोयनका नानाजी के साथ गाड़ी में थे। उसी दिन पुलिस ने गाड़ी को रोक लिया परन्तु नानाजी गिरफ्तार होने से चाल-चाल बच गये। रामनाथ गोयनका ने रागिनी से बड़े प्रेमपूर्वक पूछा, "बेटी, तुम्हें इस बात का पता है न कि इस समय के कानून के अनुसार नानाजी देश के मोस्ट वांटेड अपराधी हैं और इनकी सहायता करना और इनको पुलिस की नजरों से छिपाना एक जघन्य अपराध है। यदि नानाजी तुम्हारे साथ पकड़े जाते हैं तो तुम भी जेल जाओगी। राष्ट्रद्रोह का मुकदमा तुम्हारे ऊपर भी दायर होगा, जिसकी कम से कम सजा उम्रकैद है।" उन्होंने रागिनी को समझाते हुए कहा, "बेटी, तुम तो राजनीतिक नेता या कार्यकर्ता भी नहीं हो। तुम्हारा अपना परिवार है। तुम्हें हम लोगों की सोच समझकर मदद करनी चाहिए।" रागिनी ने उत्तर दिया, "नानाजी हमारे परिवार के बड़े सदस्य हैं। इनका ध्यान रखते हुए हमें अपने बारे में सोचने की आवश्यकता नहीं है। नानाजी का कार्य करते हुए यदि हमारी जान भी चली जाएगी तो हमें कोई झिझक नहीं होगी।"

घर लौटने पर रागिनी ने इस बातचीत की जानकारी मुझे दी। मुझे लगा कि जब एक साधारण दीपक को अग्निशिखा छू जाती है तो वह भी अंधकार से लड़ने लगता है। एमरजेंसी हटने के बाद अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रागिनी के साहस के बारे में खबरें प्रकाशित हुईं। सच तो यह है कि इसमें हमारा कुछ भी नहीं था। यह सब नानाजी की तपस्या और प्रेरणा का ही परिणाम था। ■

लेखक परिचय

राज्यसभा सदस्य रह चुके लेखक अपनी पत्नी डा. रागिनी के साथ दीनदयाल शोध संस्थान के प्रारंभिक दिनों में नानाजी के घनिष्ठ सहयोगी और संस्थान के सचिव भी रहे।